प्रभात

छिपाएंगे नहीं, छापेंगे

facebook-Subharti Tv Twitter-Subharti Tv

नवरात्रि में देवी आराधना का वैज्ञानिक महत्व

लखनऊ-प्रभात

हम जानते हैं कि नवरात्रि शब्द एक संस्कृत शब्द हैए जिसका अर्थ होता है श्नौ रातेंश। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान शक्ति ध् देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। नवरात्रि प्रत्येक वर्ष संवत्सर (वर्ष) में 4 नवरात्र होते हैं पौष, चैत्र, आषाढ़ व अश्विन मास में प्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। हमारी चेतना के अंदर सतोगुण रजोगुण और तमोगुण. तीनों प्रकार के गन व्याप्त हैं। प्रकृति के साथ, इसी चेतना के उत्सव को नवरात्रि कहते है। परंतु विद्वानों ने वर्ष में 2 बार नवरात्रों में आराधना का विधान बनाया है।

एसएमएस के महानिदेशक प्रो. भरत राज सिंह ने बताया कि विक्रम संवत के पहले दिन अर्थात चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (पहली तिथि) से 9 दिन यानी नवमी तक नवरात्र होते हैं। ठीक इसी तरह 6 माह बाद आश्विन मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से महानवमी यानी विजयादशमी के एक दिन पूर्व तक देवी की उपासना की जाती है। सिद्धि और साधना की दृष्टि से से शारदीय नवरात्र को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। इस नवरात्र में लोग अपनी आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति के संचय के लिए अनेक प्रकार के व्रत, संयम, नियम, यज्ञ, भजन, पूजन, योग.साधना आदि करते हैं। इन 9.दिनों में पहले तीन दिन तमोगुणी प्रकृति की आराधना करते हैंए दूसरे तीन दिन रजोगुणी और आखरी तीन दिन सतोगुणी प्रकृति की आराधना का महत्व है।

विधान

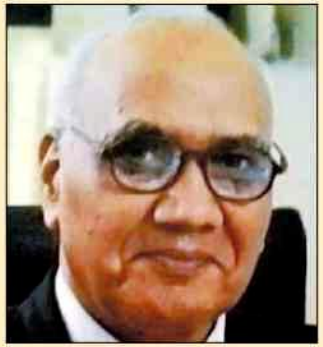

प्रो.भरत राज सिंह

माँ की आराधना : दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती ये तीन रूप में माँ की आराधना करते है। माँ सिर्फ आसमान में कहीं स्थित नही हैं, ऐसा कहा जाता है कि 'या देवी सर्वभुतेषु चेतनेत्यभिधीयते' सभी जीव जंतुओं में चेतना के रूप में ही माँ देवी तुम स्थित हो। नवरात्रि माँ के अलग अलग रूपों को निहारने और उत्सव मानाने का त्यौहार है। जैसे कोई शिशु अपनी मां के गर्भ में 9 महीने रहता हेए वैसे ही हम अपने आप में परा प्रकृति में रहकर ध्यान में मग्न होने का इन 9 दिन का महत्व है। वहाँ से फिर बाहर निकलते हैए तो सृजनात्मकता का प्रस्पुरण जीवन में आने लगता है।

देवी दुर्गा की कहानी : देवी दुर्गा की एक कहानी के अनुसार एक बार देवताओं ने उनसे पूछा किए देवी, आपने इन शस्त्रों को क्यों उठा रखा है? आप अपनी एक हुंकार से सभी दानवों का विनाश कर सकती हैं।' तब कुछ देवताओं ने स्वयं ही उत्तर देते हुए कहा, आप इतनी दयावान हैंए कि आप दानवों को भी अपने शस्त्रों के माध्यम से शुद्ध कर देना चाहती हैं। आप उन्हें मुक्त करना चाहती हैं और इसीलिये आप ऐसा कर रहीं हैं।

देवी दुर्गा के रूप का गहरा अर्थ : माँ दुर्गा की कहानी के पीछे यह संदेश हैए कि कर्म की अपनी जगह होती है। केवल अकेले संकल्प के होने से काम नहीं होता। देखिये, भगवान ने हमें हाथ और पैर दिए हैं ताकि हम काम कर सकें। देवी माता के इतने सारे हाथ क्यों हैं। इसका तात्पर्य यह है कि भगवान भी काम करते हैंए और केवल एक हाथ से नहींए हज़ारों हाथों से और हज़ारों तरीकों से। देवी के पास असुरों का विनाश करने के हज़ारों तरीकें हैं।वे एक फूल से भी अधर्म का विनाश कर सकती हैंए जैसे गांधीगिरी। इसीलिये देवी अपने हाथों में फूल लिए हैं, ताकि फूल से ही काम हो जाए। और फिर शंख बजाकर, ज्ञान प्रसारण करके भी। अगर वह भी काम नहीं करता, तो फिर वे सुदर्शन चक्र का उपयोग करती हैं। इसलिए उनके पास एक से अधिक उपाय हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि इस विश्व में परिवर्तन लाने के लिए केवल कोई एक ही युक्ति काम नहीं करती। आपको बहुत से तरीके ढूंढने पड़ते हैं।

इसी तरह का प्रतिविम्ब हम अपने रिश्तों में भी पाते है। हम हर परिस्थिति में हठ नहीं कर सकते। यदि आप अपने पिता के साथ हर समय हठ करेंगे और फिर उम्मीद करेंगे कि बात बन जाए तो ऐसा नहीं होगा। कभी प्यारए कभी हठ करना और कभी कभी गुस्सा करने से काम होता है। बच्चों के साथ भी यही है। देखिये किस तरह माँ.बाप बच्चों को बड़ा करते समय तरह तरह की युक्ति और व्यवहार करते हैं। हर बार डंडे का प्रयोग करने से काम नहीं बनेगा। कभी कभी उन्हें प्यार से भी काम करवाना पड़ेगा।